उनका ही टी. वी. हुआ

कठिन तपस्या से मिला, हमको ऐसा राज।
कुछ को छप्पन भोग तो, कुछ को सड़ा अनाज।।-1

आरक्षण से हो रहा, जिनका हृदय अशांत।
वे कैसे लागू करें, समता का सिद्धांत ॥-2

इधर तनी बंदूक है , उधर भौंकते श्वान।
हिटलर बैठा बाँटता, लोकतंत्र का ज्ञान॥-3

उनका ही टी.वी. हुआ, उनका ही अख़बार।
अब ख़बरें वे ही चलें, जो चाहें सरकार॥-4

कहने को जनतंत्र है, तंत्र मगर स्वच्छंद।
जनगणमन की भावना, संविधान में बंद॥-5

कहने को कहला रही, जनता की सरकार।
रीति-नीति में है मगर, जनता ही पर भार॥-6

किसी भाँति बुझती नहीं, सामंतों की प्यास।
बस्ती-बस्ती लिख रही, प्यासों का इतिहास॥-7

कहने-भर को ही रहा, कर्माधारित वर्ण।
क्षात्र कर्म के बाद भी, शूद्र ही रहा कर्ण॥-8

ऐसा आया है समय, अचरच में हैं सार्थ।
तत्त्वज्ञान के बाद भी, मोहग्रस्त हैं पार्थ॥-9

क़लमकार भी रख रहे, हत्यारे का पक्ष।
दो कौड़ी का गोडसे, गाँधी के समकक्ष॥-10

औरों का हक़ छीनकर, जो भी बनें महान।
उनके ही घर में पलें, भाग्य और भगवान॥-11

काशी - काबे में रहे , और रहे हरिद्वार।
किंतु वासना का रहा, सभी जगह अधिकार॥-12

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

राजेन्द्र वर्मा
जन्म-8 नवम्बर 1957, बाराबंकी (उ.प्र.) के एक गाँव में।

प्रकाशन
पाँच ग़ज़ल संग्रह, तीन गीत/नवगीत-संग्रह, दो दोहा-संग्रह, दो हाइकु-संग्रह, ताँका, पद, और छह व्यंग्य-संग्रह, निबंध, उपन्यास, कहानी, आलोचना, काव्य-शास्त्र विधाओं में दो दर्ज़न से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। महत्वपूर्ण संकलनों में सम्मिलित।

संपादन
हिंदी ग़ज़ल के हज़ार शेर, गीत-शती, गीत-गुंजन तथा साहित्यिक पत्रिका अविरल मंथन (1996-2003)

पुरस्कार-सम्मान
उ.प्र.हिन्दी संस्थान के श्रीनारायण चतुर्वेदी और महावीरप्रसाद द्विवेदी नामित पुरस्कारों सहित देश की अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

अन्य
लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा रचनाकार पर एम्-फिल.।
अनेक शोधग्रन्थों में संदर्भित। चुनी हुई कविताओं का अँगरेज़ी में अनुवाद।
एक निबंध पाठ्यक्रम में सम्मिलित।

सम्पर्क
3/29 विकास नगर, लखनऊ 226 022 (मो. 80096 60096)
ई-मेल : rajendrapverma@gmail.com